काव्य के प्रकार(Forms of Poetry)

1. दृश्य काव्य

2. श्रव्य काव्य

3. मिश्र काव्य (चम्पू काव्य)

श्रव्य काव्य

श्रव्यकाव्य के अंतर्गत, महाकाव्य, खण्डकाव्य, कथा, आख्यायिका तथा चम्पूकाव्य आते हैं । इन सबका अभिनय नही किया जाता है इसलिये इनको श्रव्यकाव्य कहा जाता है । दृश्यकाव्य के समान ही श्रव्यकाव्य का मूल प्रयोजन पाठकों को रसानन्द की अनुभूति कराना है । महाकाव्य की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

1. सर्गबन्ध- महाकव्य की कथा अत्यन्त विस्तृत होने से सर्गों में बँटा होता है । सम्पूर्ण कथा नायक, नायिका, अन्य पात्र, घटना, प्रकरण आदि पर आश्रित होती है । महाकाव्यों की कथा को छोटे-छोटे अंशों में सर्गों में विभाजित किया जाता है । यह सर्ग एक-दूसरे से जुड़े हुये हों । सर्गों की अधिकतम संख्या की कोई सीमा नही है ।

2. नायक- काव्य के प्रधान पात्र को नायक कहते हैं । 'नी' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है 'ले जाने वाला' होता है । काव्य के संदर्भ में कथा वस्तु को आगे

ले जाने वाला नायक होता है। काव्य की सम्पूर्ण कथा जिसके चारों ओर घूमती रहती है वह पात्र नायक कहलाता है। रामायण माहाकाव्य के राम। नायक को प्रसिद्ध वंश में उत्पन्न, विनम्र, मधुर, त्यागी, दक्ष, शूर एवं धार्मिक आदि होना चाहिये । नायक के अन्य प्रकार- धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशांत तथा धीरोद्धत्त।

3. रस- रसानुभूति ही समाज के आकर्षण का केन्द्र होता है। आठ प्रकार के रस- श्रृंगार, वीर, वीभत्स, रौद्र, हास्य, अद्‌भुत, भयानक तथा करूण। शान्त रस की भी कल्पना है जो कि श्रव्य काव्य में प्रस्तुत होता है। इन रसों में से वीर अथवा श्रृंगार रस अंगी होता है अन्य रसों का भी प्रयोग आवश्यक है।

4. कथा- ऐतिहासिक कथा तथा श्रेष्ठ महापुरुष या सज्जन सम्बन्धी कथा भी महाकाव्य का विषय हो सकता है। मुख्य कथा के साथ अन्य छोटी कथायें भी चलती रहती हैं। धर्म-अधर्म, सद्‌गुण-दुर्गुण, सदव्यवहार-दुर्व्यवहार, सत्य-असत्य आदि का वर्णन कर महाकवि पाठकों को इनमें से श्रेष्ठ कर्मों को आचरण में लाने को उपदेश देता है।

5. फल- चतुर्वर्ग में स कोई एक महाकाव्य का फल होता है । यह फल नायक को प्राप्त होता है। महाकाव्य इस फल-प्राप्ति के लिये प्रारम्भ से लेकर अन्त तक प्रयास करता है तथा नायक को फल प्राप्ति के साथ ही महाकाव्य की कथा सम्पूर्ण हो जाती है।